22

कोई आश्चर्य नहीं!

(6:1-8)

आपका जन्म दिन है और आपको लगता है कि किसी को याद ही नहीं है। आप कमरे में प्रवेश करने लगते हैं और कोई ज़ोर से चिल्लाता है, ''सरप्राइज़!'' अचानक आपके मित्र ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए आपको घेर लेते हैं। कइयों के लिए यह एक सुखद आश्चर्य है।[1]

कुछ आश्चर्य इतने सुखद नहीं होते। कुछ सप्ताह बाद आप एक नई कार खरीदते हैं और वह चलना बन्द कर देती है। मैकेनिक आपको बताता है कि इसकी मरम्मत के लिए हज़ारों रुपये खर्च होंगे। आप हाथ में वारंटी कार्ड लिए उस शोरूम पर जाते हैं, जहां से आपने गाड़ी खरीदी थी। मुस्कुराते हुए शोरूम मालिक आपको उस पर साफ़-साफ़ यह लिखा हुआ दिखाता है कि यह विशेष समस्या गारंटी में नहीं आती। आश्चर्य हुआ न!

आप काफ़ी समय से स्वस्थ नहीं हैं। ऐसे लगता नहीं कि कोई गम्भीर समस्या है। केवल आप पहले से अधिक जल्दी थक जाते हैं। फिर आप डॉक्टर को दिखाने का फैसला करते हैं। डॉक्टर कई टैस्ट करने के बाद मायूस सा चेहरा लेकर आपके पास आता है। वह कहता है, ''आपको ल्यूकेमिया है। आपका इलाज हो भी सकता है और नहीं भी।'' आश्चर्य हुआ न!

बार-बार आश्चर्य होने से जीवन नीरस बन जाता है, परन्तु सामान्य दिनचर्या में हम में से अधिकतर लोग जानना चाहते हैं कि आगे क्या होगा। आम तौर पर हम जीवन में ''कोई आश्चर्य'' नहीं चाहते।

प्रभु को लगा कि मसीही व्यक्ति के लिए जीवन में ''कोई आश्चर्य नहीं'' होना आवश्यक है, विशेषकर सताव के बारे में। उसने अपने चेलों के सामने आने वाले सताव के बारे में अद्‌भुत स्पष्टवादिता से बात की:

> भाई-भाई को और पिता पुत्र को घात के लिए सौंपेंगे, और लड़के बाले माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे। ... (मत्ती 10:21, 22)।
>
> यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं; मैं मिलाप कराने नहीं पर तलवार चलाने आया हूं (मत्ती 10:34)।[2]

पौलुस भी ऐसे ही सोचता था। उसने नये बनने वाले मसीहियों को बताया, ''हमें बड़े

क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा'' (प्रेरितों 14:22ख)। उसने यह भी लिखा कि ''जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं, वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12)। बाइबल यीशु के चेलों के सताए जाने के बारे में इतना कुछ बताती है, जिस कारण पतरस लिख पाया कि, ''हे प्रियो, जो दुख रूपी अग्नि ... तुम में भड़की है, इससे यह समझकर *अचम्भा न करो* कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है'' (1 पतरस 4:12)।

पिछले पाठ में, मैंने संकेत दिया था कि चार घुड़सवारों के अशुभ दर्शन वाले प्रकाशन के मुख्य भाग के आरम्भ का एक सम्भावित कारण था कि ''दुख रूपी अग्नि'' के बारे में पहली सदी के मसीहियों को ''कोई आश्चर्य न'' हो। *आज भी* हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि यीशु को अपने जीवन देने पर हमें क्या मिलने वाला है। आज की चुनौती के लिए विशेष प्रासंगिकता के साथ हम चार घुड़सवारों का अपना अध्ययन जारी रखेंगे। (चार घुड़सवारों वाला का चित्र देखें।)

क्या घुड़सवार सवारी करते रहते हैं?

इस बात को समझें कि आतंक फैलाने वाले घुड़सवारों ने केवल पहली, दूसरी और तीसरी शताब्दियों में ही सवारी नहीं की। चारों ने संसार में पाप के प्रवेश के साथ ही दौड़ आरम्भ कर दी थी (उत्पत्ति 3) और वे युगों से मनुष्यजाति को सताते आ रहे हैं। प्रकाशितवाक्य 6:1-8 को ''इतिहास का कष्ट का प्रदर्शन'' कहा गया है। जॉन बोमैन ने कहा कि पहले चार दृश्य ''एक उदास कहानी बताते हैं। यह मनुष्य की परेशानियों और उसके परिश्रम की व्यर्थता की दुखद कहानी है; यह संस्कृतियों तथा सभ्यताओं के उत्थान और पतन की चक्रीय गड़गड़ाहट है।''[3] यूजीन पीटरसन ने घोषणा की कि घुड़सवार मनुष्य के साथ मनुष्य की अमानवता से उपजी बुराई की तस्वीर हैं:

> युद्ध सामाजिक बुराई है; अकाल परिस्थितियों की बुराई है; बीमारी जीव वैज्ञानिक बुराई है। युद्ध समाज की भलाई पर आक्रमण करता है; अकाल परमेश्वर की बहुतायत का उल्लंघन करता और उसे नष्ट करता है; बीमारी परमेश्वर द्वारा दी हुई देहों को नष्ट और व्यर्थ करती है,जो समाज के विरुद्ध पाप है, देश के विरुद्ध पाप है, देह के विरुद्ध पाप है।[4]

मैं एक विरोध सुन सकता हूं: ''निश्चय ही, चारों सवारों ने कालांतर में किसी समय अपने घोड़ों को अस्तबल में रखा था। वे इस जागृत युग में घोड़ों पर सवार नहीं हैं, या हैं?'' मुझे लगता है कि इसमें ठोस प्रमाण की कमी है: ''हां, वे अभी भी सवार हैं!'' पिछले पाठ में हम ने ब्रूस मैज़गर की टिप्पणी देखी थी: ''पुस्तकों में, समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं के लेखों में और रेडियो के प्रसारणों में हम अपोकलिप्स के चार घुड़सवारों के बारे में पढ़ते और सुनते हैं, जो आज पृथ्वी के चारों ओर घूम रहे हैं।''[5] बर्टन काफ़मैन मानते थे, ''हर रोज़ सुबह समाचार पत्र में बताया जाता है कि ये खतरनाक घुड़सवार क्या कर रहे हैं, ...

इस समय वे सारे संसार के ऊपर हैं।''[6]

यदि इस बात का कि ये चारों घुड़सवार सदा से पृथ्वी पर सवारी कर रहे हैं और सदा करते रहेंगे, प्रमाण चाहिए तो निम्न बातों पर विचार करें:

श्वेत घोड़े वाला सवार

मैंने सुझाव दिया कि पहला सवार कोई भी व्यक्ति या लोगों का समूह है, जो अपनी इच्छा दूसरों पर थोपते हैं।[7] कैन के समय से ही लोग उन चीज़ों का लोभ करते आ रहे हैं, जो किसी दूसरे की हैं और उन्हें पाने के लिए किसी भी सीमा तक चले जाते हैं।[8]

एक भिखारी ने किसी करोड़पति से पूछा,
''आपको सच्ची खुशी पाने के लिए
और कितने रुपए चाहिए?''

करोड़पति ने अपने टेढ़े-मेढ़े हाथ
भिखारी के कटोरे में डालते हुए,
उत्तर दिया, ''केवल एक और!''[9]

लोभी भूस्वामी कहता है, ''मुझे संसार की सारी भूमि नहीं चाहिए! मुझे तो केवल वही चाहिए *जो मेरे खेत के साथ लगती है।*''

श्वेत घोड़े वाला सवार व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध के हर स्तर को चलाता है। उसे ''विजय,'' ''साम्राज्यवाद,'' ''लोभ'' या ''स्वार्थ का बिगड़ जाना'' कुछ भी नाम दें, वह हमारे संसार को निगलता जा रहा है और इसका अन्त स्पष्टतया विनाश ही है।

लाल घोड़े वाला सवार

पाप के रोगी इस संसार में ''लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा'' होती रहती है। एलबर्ट आईंसटाइन ने यह दुखद अवलोकन किया था ''बड़ी शक्ति वाले सर्वसत्तावादी देशों के रहते युद्ध को टाला नहीं जा सकता।''[10] युद्ध का गुणगान करने के बड़े प्रयास किए जाते हैं, परन्तु 1880 में कहे गए जनरल विलियम टैकुम्सेह शेरमैन के शब्द आज भी उपयुक्त हैं: ''मैं युद्ध से थक चुका हूं और परेशान हो गया हूं।... जिन लोगों ने कभी कोई गोली नहीं चलाई या घायलों की चीखें या कराहना नहीं सुनी, वही लोग लहू बहाने, और बदला लेने और विनाश की मांग करते हैं।''[11] मैंने वह जगह देखी है, जहां शेरमैन ने लड़ाइयों के बाद यह कहा था। मैंने उन कब्रिस्तानों को देखा है, जहां मरे हुए योद्धाओं की कब्रें क्षितिज तक फैली हैं। मैंने बिखरी हुई लाशों, मनों और जीवनों को युद्ध की भयानक वसीयत के रूप में देखा है। मैंने बचे हुए लोगों की आह को महसूस किया है। दूसरा घुड़सवार आज भी हमारे बीच में है और एक दिन के लिए भी अपने घोड़ों को अस्तबल में बांधने के लिए तैयार नहीं है।

काले घोड़े वाला सवार

किसी घुड़सवार को यदि बहुत पहले उतर जाना चाहिए था तो वह काले घोड़े वाला सवार अर्थात आर्थिक तंगी है। कृषि की तकनीक में सुधार हो रहा है, जिससे एक आदमी हज़ार लोगों को खिलाने के लिए अनाज पैदा कर सकता है।[12] लेकिन अभी भी संसार के 70 प्रतिशत से अधिक लोग रात को भूखे पेट सोते हैं। अपनी आंखें बन्द करके मैं भूख की अपनी पीड़ा को मिटाने के लिए रोटी के कुछ टुकड़ों के लिए कूड़े के ढेरों में से ढूंढ़ते लोगों को या दुबले तथा सूखे अंगों और फूले हुए पेट वाले भूखे मर रहे बच्चों की कल्पना कर सकता हूं।

पीले घोड़े वाला सवार

चौथे घुड़सवार और उसके साथी का क्या हुआ? क्या मृत्यु और अधोलोक ''तलवार, और अकाल, और मरी, और पृथ्वी के वनपशुओं के द्वारा लोगों को मार'' रही हैं (6:8)?

यह तो स्पष्ट है कि *तलवार* कभी म्यान में नहीं रही। कालांतर और वर्तमान में इसके ढेरों उदाहरण हैं: कत्लेआम में साठ लाख यहूदी मारे गए; हिरोशिमा में एटमी धमाकों से स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों को धुएं में मिला दिया गया; आज भी युद्ध से पीड़ित नगरों की गलियों में लोगों की क्षत-विक्षत लाशें पड़ी मिलती हैं।[13] घर के पास ही नज़र मार लें, कौन ऐसा है, जिसने अपने प्राणों से प्रिय किसी प्रियजन को दफ़नाया न हो?

अकाल आज भी इस भयानक युग्म द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है। 1943 में युद्ध से पैदा हुए अकाल के कारण पचास लाख मौतें हुईं और 1970 के दशक में कम्बोडिया में असंख्य लोगों को कष्ट हुआ। सूखे से इस समय कितने लोग मरते हैं।

मरी मृत्यु के शस्त्रागार में एक विनाशकारी हथियार रहा है। छठी शताब्दी के दौरान मध्यपूर्व, यूरोप और एशिया में महामारी (ताऊन) से दस करोड़ और चौदहवीं शताब्दी में यूरोप में साढ़े सात करोड़ लोग मारे गए। 1918-19 के संक्रामक नज़ले की महामारी ने मेरे परिवार को अपनी चपेट में ले लिया; मरने वाले दो करोड़ लोगों में मेरी दादी भी शामिल थी (उस समय पिता जी चार साल के थे)। AIDS आज सबसे खतरनाक महामारी साबित हो सकती है।

''पृथ्वी के *वन पशुओं*'' के बारे में क्या कहना है? जहां मैं रहता हूं, वहां अधिकतर जंगली जीव चिड़ियाघरों में रहते हैं। क्या मृत्यु ने अब ''वन पशुओं'' को कम कर दिया है? या जंगली जीवों को रोम, बैरूत, और बैलफास्ट के आतंकवादियों से भी अधिक खतरनाक ''वन पशुओं'' की जगह दे दी गई है; जो ऐसे लोगों में बदल गए हैं, जिन्होंने ओक्लाहोमा नगर, ओक्लाहोमा की फैडरल बिल्डिंग को उड़ा दिया; वाइट काउंटी, आरकैंसा के ''नीली रोशनी वाले बलात्कारी''?[14]

निश्चय ही मेरे यह कहने पर कोई इस बात पर बहस नहीं करेगा कि चौथा घुड़सवार अभी भी सवारी कर रहा है। कोई उससे बच नहीं सकता। पहले तीन घुड़सवारों के आगे

से तो आप हट सकते हैं, परन्तु पीले घोड़े के सवार से आप बच नहीं सकते। उसकी किताब में आपसे मिलने के लिए आपका नाम है (इब्रानियों 9:27)।

क्या मैं आपको विश्वास दिला पाया कि चारों घुड़सवार अभी भी सवारी कर रहे हैं? अरल पाल्मर ने यह निष्कर्ष निकाला है कि ''किसी भी समय आ जाने वाला भय'' और उनके काम करने का तरीका ही बदला है:

> पहली शताब्दी में अपने शिकार को मार गिराने वाला तीरंदाज इस शताब्दी में अन्तर महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रों को लगाता है। युद्ध रथों पर सवार होने वाला बीसवीं शताब्दी के अन्त के [दिनों] को तेज़ गति वाले टैंकों, हैलीकॉप्टरों और नगर की गलियों पर अचानक आतंकवादी हमलों के संकट लाता है। अकाल और मृत्यु ही वहीं रहते हैं। पहली शताब्दी [कृषि] में भूख से मर रहा बच्चा बीसवीं शताब्दी के औद्योगिक विकास में भूख से मर रहे बच्चे की तरह लगता है।[15]

परमेश्वर उन्हें सवार होने क्यों देता है?

यदि हम यह मान लें कि चारों घुड़सवार आज भी अपने-अपने घोड़ों पर चढ़े हुए हैं, तो एक प्रश्न उठता है, जो यूहन्ना के समय में भी उठा था कि ''क्यों?'' परमेश्वर बिना उद्देश्य के कुछ नहीं करता। तो फिर प्रभु चार घुड़सवारों के दर्शन में क्या संदेश देने का प्रयास कर रहा था? पिछले पाठ में, हमें पहली शताब्दी के मसीहियों के दृष्टिकोण से ऐसा ही एक प्रश्न समझ नहीं आ रहा था। आइए अब हम अपने दृष्टिकोण से इसे समझने का प्रयास करें।[16]

भविष्य त्रासदी से भरा होगा

एक सच्चाई जो परमेश्वर हमें बताना चाहता है, वह यह है कि जहां तक इस संसार की बात है, इसका भविष्य त्रासदी से भरा ही होता है। टॉमी साऊथ ने लिखा है, ''कुछ लोग आदर्श राज्य अर्थात 'पृथ्वी पर स्वर्ग,' शांति और स्थिरता के 'सुनहरी युग' की तलाश में रहते हैं। पहली चार मुहरें डंके की चोट पर ऐलान करती हैं कि यह कभी नहीं होगा। स्वर्ग *स्वर्ग में* ही रहेगा और उससे पहले नहीं होगा।''[17]

हमारे आस-पास लोगों की परेशानियां इस बात का प्रमाण हैं कि हम पाप से भरे संसार में रहते हैं। पहला पाप कांटे और ऊंटकटारे, पसीना और दुख का कारण बना था (उत्पत्ति 3:16-19)। मनुष्य के पाप में लगे रहने के कारण पृथ्वी पर महामारी जारी रहती है। मैज़गर ने लिखा है:

> परमेश्वर अकाल और मृत्यु और नरक की स्वीकृति नहीं देता, परन्तु परमेश्वर के नियम का विरोध करके बहुतेरे लोग इसके पीछे जाते हैं। ... भौतिक नियमों को नज़रअन्दाज कर दें, जैसे चोटी से कूद पड़ें, तो परिणाम भयंकर होगा। नैतिक नियमों की अवहेलना करें, तो, विनाश सुनिश्चित है। ... परमेश्वर किसी को दुख नहीं देना

चाहता, पर जब तक हम स्वतन्त्र हैं तब तक परमेश्वर उन्हें अनुमति देता है।[18]

विश्वासियों को परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा

परमेश्वर हमें यह भी समझाना चाहता है कि विश्वासी होने पर भी हमें परीक्षाओं का सामना करना पड़ेगा। ''स्वास्थ्य और धन'' के आज के भविष्यवक्ता इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सच्चे विश्वासियों को जीवन की सामान्य कठिनाइयों से छूट है। उनके चेलों[19] को पूरी तरह स्वस्थ रहने और आर्थिक सुरक्षा की प्रतिज्ञाएं दी जाती हैं। परीक्षाओं के सम्बन्ध में, उनका संदेश है कि ''कोई कष्ट नहीं'' जबकि यीशु का संदेश था ''चकित न हो।'' यीशु ने ''झूठे भविष्यवक्ताओं'' के बारे में बताया था, जो उठकर ''बहुतों को भरमाएंगे'' (मत्ती 24:11)। यूहन्ना ने कहा कि ''बहुत से झूठे भविष्यवक्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1ख)। यह दावा करने वाले कि विश्वासी लोगों को कोई समस्या नहीं आती[20] इस बात का प्रमाण है कि यीशु और यूहन्ना ने सच कहा था।

> सच तो यह है कि मसीही लोग बपतिस्मे के पानी की आत्मिक कब्र में से भौतिक शांति और धन के पूर्ण संसार में नहीं आते हैं। भौतिक जीवों के रूप में हमारे लिए सब लोगों पर आने वाले प्रतिदिन के सदमों, भयभीत करने वाली संसार की घटनाओं, बीमारियों और मृत्यु का सामना करना आवश्यक है...।[21]

पिछले पाठ में, मैंने कहा था कि ''उपद्रव, परीक्षाएं और संकट सब लोगों पर आते हैं, परन्तु *मसीही* लोगों को इसका दोहरा भाग मिलता है अर्थात यीशु के अनुयायियों पर जीवन के सामान्य उतार-चढ़ाव ही नहीं आते, बल्कि उन्हें गलत भी समझा जाता है और अपने विश्वास के कारण उन्हें सताया जाता है।'' यदि हम पहले से इस सच्चाई से अवगत नहीं थे, तो अब हो जाएं।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि घोड़ों की भगदड़ से उत्पन्न होने वाले आतंक की व्याख्या कैसे करूं। हम में से कुछ लोगों ने भगदड़ को देखा है, बहुत कम लोग होंगे जो उसमें फंसे होंगे। मैंने कई घोड़ों को देखा और कुछ घोड़ों पर सवारी भी की है, परन्तु मैं कभी किसी से डरा नहीं (यद्यपि किसी घोड़े द्वारा मुझे फैंक दिए जाने पर मुझे अफसोस अवश्य हुआ)। यह उदाहरण ध्यान में आया है: हम में से अधिकतर लोग रेलगाड़ी के निकट आने पर पटरी के बीच में खड़े रहने के खतरे के बारे में जानते हैं। मान लीजिए कि हम ने पटरी पर खड़े रहने की हर हाल में ठान रखी है। कल्पना करें कि एक विशालकाय इंजन के सीटी मारते हुए, जिसके पहिए रुकने की कोशिश कर रहे हैं हमारी ओर आते दिख रहे हैं। यह भावना उससे काफ़ी मिलती-जुलती होगी कि प्राचीन जगत में अपनी ओर भागते हुए घोड़ों को आते देखकर उन्हें कैसा लगा होगा, जिसमें उन्हें छिपने का कोई स्थान नहीं था।

चार घुड़सवारों का दर्शन एक अतिरिक्त प्रमाण है कि यीशु के अनुयायी होना आसान नहीं है!

पिता दुखी लोगों का पक्ष लेगा

मुझे लगता है कि पहली चार मुहरों से परमेश्वर हमें सच्चाई सिखाना चाहता है और वह यह है कि वह दुखी लोगों का ही साथ देगा। हम में से अधिकतर को पहले से ही पता है कि यह संसार समस्याओं से भरा पड़ा है और उनमें से कुछ समस्याएं हमारे अपने जीवनों में भी हैं। जो बात हमें याद रखनी है, वह यह है कि समस्या आने पर परमेश्वर हमें छोड़ता नहीं है।

परमेश्वर द्वारा चार घुड़सवारों को सवारी करने देने का एक कारण हमें यह समझाना है कि हमें उसकी आवश्यकता है ताकि हम उसकी ओर मुड़ें। शैतान चार घुड़सवारों का इस्तेमाल इसके विपरीत कारण के लिए करता है ताकि लोग प्रभु की ओर से मुड़ जाएं। शैतान की सफलता का एक उदाहरण यह ''साबित'' करने का सबसे प्रसिद्ध तर्क है कि परमेश्वर है ही नहीं: छद्म बुद्धिजीवी पूछता है, ''यदि परमेश्वर है, तो संसार में इतना दु:ख क्यों है?''[22]

परन्तु शैतान अधिक चतुराई से लोगों पर घुड़सवारों का इस्तेमाल करता है अर्थात वह लोगों का ध्यान पृथ्वी की समस्याओं की ओर लगाने के लिए चार घुड़सवारों के द्वारा विनाश का इस्तेमाल करता है। उसकी इस योजना के सम्बन्ध में, एल्ड्रड इकोल्स ने लिखा है:

> यह जानते हुए कि हम भौतिक जीव हैं, शैतान हमें सुरक्षा से दूर करने के लिए हर भौतिक साधन का इस्तेमाल करता है। वह हम पर शारीरिक हमला करता है और हमारा ध्यान भुखमरी, अकाल और पर्यावरण जैसी बातों पर लगवाता है। वह हमारा ध्यान इन से भी महत्वपूर्ण अर्थात *आत्मिक युद्ध* [अर्थात वह युद्ध जो हम उसके विरुद्ध लड़ रहे हैं] से हटाता है।[23]

विश्वासियों के विरुद्ध इस युद्ध में शैतान एक कदम आगे की यह नीति अपनाता है। जब हम उन घुड़सवारों को अपने जीवनों के साथ टकराते देखते हैं, तो शैतान हमारे कान में फुसफुसाता है, ''अपना ध्यान इन्हीं क्रूर पशुओं और उनके बेदर्द सवारों पर लगाए रखना। तुम्हारे दिलो-दिमाग में उन्हीं का दिया कष्ट रहे। निराशा और हताशा में उन्हीं को अपने पीछे भागने दो!'' पीटरसन ने लिखा है:

> किसी भी रूप में आने वाली बुराई से हमें लगता है कि पूरी ही है। इससे दूसरी हर बात हमारे दिमाग से निकल जाती है। दांत का दर्द शरीर के हर दूसरे भाग में स्वास्थ्य का ध्यान रखना हमारे दिमाग से निकाल देता है। पैर के अंगूठे के दर्द से कोहनी के बिना प्रयास किए झुकने के अद्‌भुत काम की सराहना करना असम्भव हो जाता है।[24]

पीटरसन की पंक्तियां पढ़ते हुए मुझे दांत के दर्द और वह बेचैन रात याद आ गई, जब पहली बार मैं रात भर नहीं सो पाया था, जिसमें केवल मेरे जबड़े की भयानक कंपकंपी ही रह गई थी। यदि हम रास्ते में आने वाली गम्भीर समस्याओं के प्रति सावधान हैं तो हम उन में इतना खो सकते हैं कि हमारी आंखों में केवल वही दिखाई देती हैं अर्थात जीवन में उन लोगों की

भलाई, जिन्हें आवश्यकता है और अपना परमेश्वर भी भूल सकता है जो हम से प्रेम करता है।

लाइफ़ पत्रिका के अक्तूबर 1993 के अंक में जैंसन नामक एक लड़के का बांसुरी बजाते हुए मन में उतर जाने वाला एक फोटो था। उसके लम्बे, काले बालों के नीचे, जहां उसकी आंखें होनी चाहिए थीं, केवल खाली खोल थे। कारण जो भी हो, लेकिन अंधेपन पर शोक करना आवश्यक है; परन्तु बोगोटा, कोलम्बिया में जैंसन का अनुभव इससे भी दुखद रहा। जब वह दस महीने का था, तो उसकी मां उसे अत्यधिक दस्त होने के कारण अस्पताल ले गई। अगले दिन जब वह वापस आई, तो उसकी आंखों पर पट्टियां बंधी हुई थीं और उसके शरीर पर लहू की पपड़ी जमी हुई थी। वह उसे किसी दूसरे अस्पताल में ले गई, जहां उसे बताया गया कि उसकी आंखें तो किसी ने चुरा ली हैं। कितना दुखद है! मैं आपको बताना चाहता हूं कि कोलम्बिया के मानवीय अंग चुराने वालों के इस विवरण से भी एक दुखद घटना हुई है: कोई है जो *आत्मिक* दृष्टि यानी सचमुच में महत्वपूर्ण बात को देखने और जांचने के लिए हमारे जीवनों में समस्याओं के आक्रमण में परमेश्वर के हाथ को देखने की योग्यता को चुरा लेता है। वह शैतान ही है![25] परमेश्वर का धन्यवाद हो कि "हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं" (2 कुरिन्थियों 2:11ख)। शैतान को आपकी आत्मिक सूझ को चुराने के लिए "जीवन की" चिंताओं का इस्तेमाल न करने दें (लूका 8:14)!

पिछले पाठ में, मैंने 6:1-8 के शब्दों की ओर ध्यान दिलाया था, जिनमें यह ज़ोर दिया गया है कि नियंत्रण परमेश्वर के हाथ में है और वह अपनी योजनाओं और उद्देश्यों पर काम कर रहा है। अध्ययन जारी रखते हुए, हम देखेंगे कि उसकी योजनाओं और उद्देश्यों में मुख्य बात अपने लोगों को आशीष देने की इच्छा है। मूसा से उसने कहा था, "मैं ने सचमुच अपने लोगों की दुर्दशा ... देखी है; और उनकी आह और उन का रोना सुना है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिए उतरा हूं" (प्रेरितों 7:34क)। पहली शताब्दी में भी परमेश्वर की यही भावना थी और आज भी है!

सारांश

समस्याओं के विषय में पढ़ने वाले प्रकाशितवाक्य की पुस्तक "कोई आश्चर्य नहीं" पढ़ते हैं। पहली चार मुहरें हमें याद दिलाती हैं कि कष्ट को टाला नहीं जा सकता। लोभ, युद्ध, आर्थिक तंगी और मृत्यु जीवन का आवश्यक भाग हैं, जो पाप के द्वारा दूषित किए संसार का भाग हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग निराश हो जाएं। "यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" (रोमियों 8:31)।[26]

द्वितीय विश्व युद्ध के काले दिनों के दौरान, विंस्टन चर्चिल ने हैरो स्कूल के ग्रेजुएट होने वाले छात्रों को सम्बोधित किया था।[27] उनके भाषण के ये शब्द आज भी व्यावहारिक हैं: "कभी हार न मानो, कभी हार न मानो, कभी नहीं, कभी नहीं, कभी नहीं किसी बात में नहीं, चाहे वह कितनी भी बड़ी या छोटी, महान या तुच्छ क्यों न हो-कभी हार न मानो। ..."[28] शैतान के साथ हमारे युद्ध में, बाइबल भी कहती है, "कभी हार न मानो": "... हियाव बांधकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और; न तेरा मन कच्चा हो; क्योंकि जहां-जहां तू

जाएगा, वहां-वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा'' (यहोशू 1:9)। इस आयत की सच्चाई अगले पाठों में बार-बार गूंजती रहेगी। अपने जीवन को इससे बांध लें।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

यदि आप इस पाठ और पिछले पाठ को मिलाना चाहें तो मिला सकते हैं: (1) यूहन्ना के समय में चार घुड़सवार, (2) आज के चार घुड़सवार।

टिपपणियां

[1]यदि ये सुखद और असुखद आश्चर्य वहां नहीं हैं, जहां आप रहते हैं, तो आप अपने उदाहरण ले लें। [2]सताव पर यीशु की शिक्षा के अन्य उदाहरणों के लिए, देखें मत्ती 5:10-12, 44; 10:23; 13:21; 23:34; लूका 11:49; 21:12; यूहन्ना 15:20. [3]जॉन विक बोमैन, *द फर्स्ट क्रिश्चियन ड्रामा: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1955), 49. [4]यूजीन एच. पीटरसन, *रिवर्सड थंडर* (सैन फ्रैंसिस्को: हार्परकोलिन्स पब्लिशर्स, 1988), 76. [5]ब्रूस एम. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 59. [6]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री आन द बुक ऑफ रैवलेशन* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाऊंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 142. [7]यदि आपने निष्कर्ष निकाला है कि पहला घुड़सवार यीशु है, तो आपको यह बात माननी होगी कि ''धन्यवाद परमेश्वर का सुसमचार आगे ही आगे बढ़ता जा रहा है'' आदि। [8]आज चार घुड़सवारों की व्याख्या करते हुए, मैं ऐसी अभिव्यक्तियों का इस्तेमाल करूंगा जो मेरे लिए सार्थक हैं और उम्मीद है कि उनके लिए भी जो मेरे सुनने वाले हैं। अभिव्यक्तियों और उदाहरणों को अपने और अपने सुनने वालों की आवश्यकतानुसार बदल लें। [9]कैल्विन मिल्लर, *ए रिक्युम फ़ॉर लव,* लीडरशिप जरनल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1993), 93 से। [10]जॉन बार्टलैट, *जॉन बार्टलैट फैमिलियर कुटेशन्स,* 16वां संस्क., सामा. संस्क. जस्टिन कैप्लन (बोस्टन: लिटिल, ब्राउन, एण्ड कं., 1992), 636 में उद्धृत।

[11]लियोनर्ड लूइस लेविन्सन, *वेबस्टर'स अनअफ्रेड डिक्शनरी* (न्यू यॉर्क: कोलियर बुक्स, 1967), 254 में उद्धृत। शेरमैन अमेरिकी गृह युद्ध में एक यूनियन का सेनापति था। [12]मेरे मित्र जोयल डेविस ने ध्यान दिया कि ''समस्या उत्पादन की नहीं बल्कि विवरण की है।'' यह सही है। मिलती-जुलती समस्या तकनीक को उन देशों में ले जाने की है जहां इसकी बुहत आवश्यकता है। [13]इस पुस्तक में दिए आंकड़े कई विश्व कोषों तथा अन्य स्रोतों से लिए गए हैं। [14]इस व्यक्ति के पास एक गाड़ी थी, जिस पर पुलिस की कार लगने के लिए नीली लाइट लगाई गई थी। वह महिला ड्राइवरों को रोककर उनसे बलात्कार करता था। [15]अर्ल एफ़. पाल्मर, *1, 2, 3 एण्ड रैवलेशन,* द कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 177. [16]मजबूरी में, पिछले पाठ में दिए गए उत्तर इस पाठ में भी मिलेंगे। [17]टॉमी साऊथ, ''द फ़ोर मैसेजस ऑफ़ द सैवन सील्स,'' *टुथ फ़ॉर टुडे* (अंग्रेज़ी, नवम्बर 1988):9. [18]मैज़गर, 58. [19]आम तौर पर इन गुरुओं के चेले बनने के लिए खासा दान देना पड़ता है। [20]क्या उन्होंने बाइबल नहीं पढ़ी? क्या उन्होंने अय्यूब की कहानी या रोटी के टुकड़ों के लिए तरसते विश्वासी लाज़र की कहानी या ईमानदारों के कष्टों के सैकड़ों उदाहरण नहीं पढ़े?

[21]एल्डरेड एकोल्सु, *हैवन' यू हर्ड? देयर'स ए वार गोइंग ऑन!: अनलॉकिंग द कोड टू टैवलेशन* (फोर्ट वर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग, 1995), 82. [22]प्रसिद्ध होने के बावजूद यह तर्क इस प्रश्न से मेल नहीं खाता, यह सचमुच परमेश्वर के *अस्तित्व* के बजाय मनुष्य के *स्वभाव* से जुड़ा हुआ है। इस ''तर्क'' का उत्तर

देना मेरा काम नहीं। इस और इसके जैसे और ''तर्कों'' का जवाब देने के लिए मसीही प्रमाणों की अच्छी पुस्तकें हैं। [23]एकोल्स, 72. [24]पीटरसन, 73. [25]क्रेग ब्रायन लारसन, सं., *कन्टेम्परेरी इलस्ट्रेशन्स फ़ॉर प्रीचर्स, टीचर्स, एण्ड राइटर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुकस, 1996), 240. [26]यूजीन एच. पीटरसन, द *मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद साम्स एण्ड प्रोवर्ब्स* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो स्प्रिंग्स: नवप्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995), 379. [27]हैरो हाउस, हैरो, मिडलसेक्स, इंग्लैंड में लड़कों का एक प्राइवेट स्कूल है। [28]जॉन बार्टलैट, *बार्टलैट'स फैमिलियर कुटेशन्स,* 16वां संस्क. सामा. संस्क. जस्टिन कैप्लन (बोस्टन: लिटिल, ब्राऊन एण्ड कं., 1992), 621.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आप सुखद और असुखद आश्चर्यों के और उदाहरण दे सकते हैं? क्या आपको असुखद आश्चर्य अच्छे लगते हैं?
2. क्या आप मानते हैं कि घुड़सवार आज भी हैं?
3. क्या आप श्वेत घोड़े वाले सवार द्वारा किए जाने वाले और कामों का उदाहरण दे सकते हैं? क्या वह कभी आपके जीवन में, आपके परिवार या मित्रों के जीवन में सवार हुआ है? लाल घोड़े वाला सवार है? काले घोड़े वाला सवार? पीले घोड़े वाला सवार?
4. परमेश्वर द्वारा परीक्षाएं *उत्पन्न करने* और *अनुमति देने* में क्या अन्तर है?
5. क्या आप मानते हैं कि ''जहां तक इस संसार की बात है, भविष्य त्रासदी से भरा रहेगा''?
6. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि ''विश्वासी होने के बावजूद, हमें समस्याओं का सामना करना पड़ेगा''?
7. इस पाठ के लेखक के यह कहने का क्या अर्थ है कि मसीही लोगों को समस्याओं का ''दोहरा भाग'' मिलता है? क्या आप सहमत हैं?
8. लेखक कई साल पहले भगदड़ से पैदा होने वाले आतंक को आगे पहुंचाने के उदाहरण के लिए रेलगाड़ी का इस्तेमाल करता है। आप कौन-सा उदाहरण इस्तेमाल करेंगे?
9. क्या आप मानते हैं कि परमेश्वर ''अपने दुखी बच्चों का ही पक्ष लेगा''?
10. शैतान हमारे विश्वास को खत्म करने के लिए भौतिक समस्याओं का इस्तेमाल कैसे करता है? क्या आपको लगता है कि वह सामान्य संसार में प्रभावी है? सबसे महत्वपूर्ण बात, क्या उसका आपकी सोच पर कोई असर है?
11. क्या हमें सचमुच विश्वास है कि परमेश्वर हमारी ओर है? यदि हमें सचमुच विश्वास है तो इससे हमारे जीवन पर क्या असर पड़ेगा?

चार घुड़सवार (6:1-8)